परिवार के एंकाकी (Only Child) एवं सहोदर (Sibling) बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 ओम दत्त शर्मा
डॉयरेक्टर
बी.एल.जे.एस. कॉलेज
तौशराम, हरियाणा, भारत ।

आदित्य राजन
शोधकर्ता
बी.एस.जे.एस. कॉलेज
तौशराम, हरियाणा, भारत ।

सारांश

व्यक्ति अपने पर्यावरण का दास हैं वह जैसे वातावरण में रहता है जैसी परिस्थितियों में जन्म लेता है जैसे व्यक्तियों के बीच पलता है उसकी के अनुकूल उसका व्यक्तित्व और विचारधारा बन जाती हैं। साथ ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व गुणों के अनुसार अलग–अलग परिस्थितियों में अलग–अलग प्रकार से समायोजन स्थापित करता है । समायोजन भी जन्म से लेकर मृत्यु तक चलाता रहता है और व्यक्तित्व गुणों के साथ–साथ समायोजन को भी प्रमाणित करता है । इन्हीं वातावरण, परिस्थिति, आयु, लिंग इत्यादि के कारण व्यक्ति के समायोजन के स्तर में अन्तर की कल्पना की पा सकती हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन में परिवार के एंकाकी एवं सहोदर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन के स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है । जिसके लिए हरियाणा क्षेत्र के एंकाकी एवं सहोदर बालक एवं बालिकाओं 90–90 (5 बालक एवं 45 बालिकाएँ) का चयन नियत विधि के आधार पर किया गया है । अध्ययन हेतु डॉ. आर.के पारा निर्मित समायोजन अपनी को उपयोग किया गया । परिवर्तियों के मध्य अन्तर ज्ञात करने के लिए टी. मूल्य का उपयोग किया गया। समस्त एंकाकी एवं सहोदर बालक बालिकाओं के मध्य टी.मूल्य 1.82 आया जो कि .01 एवं .05 सार्थक स्तर पर अन्तर को नहीं दर्शाता हैं । जबकि आन्तरिक समूह में बालक और बालिकाओं में सार्थक अन्तर पाया गया तथा यह कल्पना की गयी कि बात को अप्रेक्षा बालिकाएँ व्याख्या समायोजित है ।

प्रस्तावना

समायोजन निरन्तर चलने वाली क्रिया है क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर और अपनी कोई आवश्यकताओं को वह पूरा कर लेता है उनके प्रति भी समय बीतने के साथ–साथ समायोजन टूटने या बिगड़ने लगता है । इसीलिए समायोजन लगातार चलने वाली क्रिया है और हम न केवल प्रतिदिन बल्कि जीवन पर्यन्त अपना समायोजन बनाने में ही लगे रहते हैं । इसलिए मैसलो तथा मिटिलमैन ने समायोजन की परिभाषा देते हुए कहा ''व्यक्ति के समायोजन से उसकी विशिष्ट कार्य पद्धति का बोध होता है जिसके कारण वह अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने तथा उनके साथ तालमेल बनाने का प्रयास करता है ।'' इस

प्रकार मासलो तथा गिटिलमैन ने अपनी समस्याओं को सुलझाने और उनके साथ तालमेल बनाये रखने को ही समायोजन कहा है । शैफर ने आवश्यकताओं पर बल दिया और कहा ''जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को सही ढंग से पूरा कर लेता है और विषम परिसिथतियों में भी तालमेल बनाये रखने में सफल होता है उसे ही हम समायोजित व्यक्ति कहते हैं ।''

जफर मुन्तजिर (2002) ने निम्न उपलब्धि के छात्र–छात्राओं तथा उच्च उपलब्धि के छात्र–छात्राओं के समायोजन, आत्मबोध और दबाब का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि उच्च उपलब्धि के छात्रों का समायोजन निम्न उपलब्धि के छात्रों से श्रेष्ठ होता है।

रीता जैटली (2003) ने स्नातक स्तर के समायोजित और कुसमायोजित बालकों की व्यक्तित्व विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि कुसमायोजित छात्रों की व्यक्तित्व विशेषताओं में सार्थक अंतर पाया जाता है । इसी प्रकार समायोजित छात्रों में ए. सी. ई, एफ, जी, एच, आई, एम, ओ, क्यू–1, क्यू–2 तथा क्यू–3 जैसे व्यक्तित्व गुण कुसमायोजित छात्रों की तुलना में अधिक पाये गये हैं ।

उद्देश्य

1 परिवार के अकेले बालक तथा अकेली बालिका के समायोजन का अध्ययन करना ।

2 परिवार के दो बालक तथा दो बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।

3 परिवार की दो बालिकाओं तथा एक बालक, एक बालिका के समायोजन का अध्ययन करना ।

4 परिवार दो बालक तथा एक बालक एक बालिका के व्यक्तित्व गुणों तथा समायोजन का अध्ययन करना ।

5 परिवार में तीन बालिकाओं तथा तीन बालकों के समायोजन का अध्ययन करना ।

6 परिवार में तीन बालिकाओं तथा एक बालक दो बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।

7 परिवार में तीन बालिकाओं तथा दो बालक एक बालिका के समायोजन का अध्ययन करना ।

8 परिवार में तीन बालिकों तथा एक बालक दो बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।

9 परिवार में तीन बालिकाओं तथा दो बालक एक बालिका परिवार में तीन बालिकाओं तथा एक बालक दो बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

01. परिवार के अकेले बालक तथा अकेली बालिक के समायोजन में अंतर पाया जाता है।

02. परिवार के दो बालक तथा दो बालिकाओं के समायोजन में अंतर पाया जाता है।

03. परिवार में दो बालिकाओं तथा एक बालक एक बालिका के समायोजन में अंतर पाया जाता है।

04. परिवार में दो बालक तथा एक बालक एक बालिका के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

05. परिवार में तीन बालिकाओं तथा तीन बालकों के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

06. परिवार में तीन बालिकाओं तथा एक बालक दो बालिकाओं के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

07. परिवार में तीन बालिकाओं तथा दो बालक एक बालिका के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

08. परिवारर में तीन बालकों तथा एक बालक दो बालिकाओं के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

09. परिवार में तीन बालक तथा दो बालक एक बालिका के समायोजन में अंतर पाया जाता है ।

प्रतिदर्श

अध्ययन हेतु हरियाणा क्षेत्र के एंकाकी एवं सहोदर 180 बालक एवं बालिकाओं का चयन अनियत विधि से किया गया । जिसमें दोनों वर्गों से 90+90 (45 बालक +45 बालिकाएँ) लिये गये ।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु डॉ. आर.के.ओझा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें 140 प्रश्न है तथा सभी प्रश्न व्यक्ति के समायोजन से सम्बन्धित है ।

परीक्षण की विश्वसनीयता 200 हाईस्कूल 200 इन्टरमीडियट और 200 स्नातक छात्र–छात्राओं पर परीक्षण करके ज्ञात की गयी ळै । जो कि .91 गृह के स्वास्थ्य में .90 सामाजिक में .89 तथा संवेगात्मक में .92 ज्ञात हुई ।

परीक्षण की वैधता का आधार विषय वस्तु वैधता है ।

परिणाम एवं व्याख्या

परिवार के एंकाकी एवं सहोदर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन मापनी से प्राप्त माध्य मानक विचलन का प्रदर्शन ।

तालिका संख्या –01

समायोजन	1 बालक Mean	S.D	1 बालिका Mean	S.D	2 बालक Mean	S.D	2 बालिका Mean	S.D	1बालक + 1 बालिका Mean	S.D
गृह	45.85	4.27	43.3	5.18	49.85	1.13	46.4	3.12	50.25	3.17
सामाजिक	45.05	3.77	46.4	3.34	47.35	3.02	46.55	3.16	96.8	4.42
संवेगात्मक	44.05	5.59	46.5	3.43	46.35	4.14	47.95	4.32	48.4	3.68
स्वास्थ्य	46.5	4.69	46.9	4.54	46.80	3.53	45.95	3.64	48.2	3.93
समग्र	179.4	9.51	185.0	9.25	190.35	6.33	186.85	5.56	193.65	9.24

शोध परिणाम तालिका संख्या 01 में प्रदर्शित किये गये है ।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि एंकाकी बालकों का अध्ययन 179.4 है तथ बालिकाओं का अध्ययन 185.0 है अतः अध्ययन के आधार पर एकाकी एवं सहोदर में बालक से बालिकाओं का समायोजन का उच्च स्तर पाया गया । तालिका संख्या 1 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि समस्त एंकाकी एवं सहोदर बालक तथा बालिकाओं के मध्य अन्तर ज्ञात हुआ जिससे बालिकाएँ बालकों की अप्रेक्षा अधिक समायोजित पाई गयी । अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना संख्या 01 एकाकी एवं सहोदर बालक एवं बालिकाओं में अन्तर पाया जाता है। स्वीकष्त की पाती हैं ।

परिणाम यह भी दर्शाता है कि परिवार में अकेले बालक की तुलना में अकेली बालिका ज्यादा समायोजन स्थापित कर लेती है ।

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि जिन परिवारों में दो बालक और बालिकाओं होती है वहाँ पर भी दो बालक से तुलना में बालिका के समायोजन उच्च स्तर का होता है । क्योंकि बालिकाएँ सुख से ही बालकों की तुलना में अधिक समायोजित होती है। इसी प्रकार अगर दो बालक दो बालिकाओं की तुलना की पाए तो दो बालकों का सम्पूर्ण समायोजन मध्यमान 190.35 है जबकि दो बालिकाओं का मध्यमान 186.85 है । अतः यहाँ दो बालक का दो बालिकाओं से ज़्यादा उच्च स्तर का समायोजन है । अतः यहाँ परिकल्पना संख्या 03 एंकाकी और सहोदर दो बालक एवं दो बालिकाओं के समायोजन में अंतर होगा । स्वीकष्त की जाती है । इसी क्रम में अगर परिवार में दो बालिकाएँ और एक बालक एवं एक बालिका है तो दोनो के मध्य एक बालिका एवं एक बालक के मध्य ज्यादा समायोजन होगा । अतः परिकल्पना 3 एवं 4 स्वीकृत की जाती है ।

तालिका संख्या 02

समायोजन	3 बालक		3 बालिकाएँ		1 बालक + 2 बालिका		2 बालिका + 1 बालक	
	Mean	S.D	Mean	S.D	Mean	S.D	Mean	S.D
गृह	48.0	4.24	44.4	5.55	45.0	4.14	44.0	3.33
सामाजिक	46.0	4.02	47.8	3.74	45.0	3.35	44.0	3.29
सर्वेगात्मक	46.0	5.05	49.7	4.34	45.5	3.62	44.5	3.58
स्वास्थ्य	47.0	3.84	44.7	5.49	43.9	3.56	43.0	2.39
समग्र	188.0	6.11	186.6	10.08	179.0	5.87	176.0	5.09

शोध परिणाम तालिका संख्या 02 में प्रदर्शित किये गये है ।

तालिका संख्या 02 के परिणाम यह बताते है कि एकांकी एवं सहोदर के 3 बालक का सम्पूर्ण समायोजन का अध्ययन 188 है तीन बालिकाओं के समायोजन का मध्यमान 186.16 है। अतः परिणामों के आधार पर जिस परिवार में तीन बालक होते है वहाँ अधिक समायोजन देखने को मिलता है ।

परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि जिन परिवारों में केवल तीन बालिकाओं होती है वहाँ समयोजित उच्च स्तर का होता है । तालिका संख्या 2 के अनुसार सम्पूर्ण तीन बालिकाओं का मध्यमान 186.6 तथा 1 बालक 2 बालिकाओं का मध्यमान 179 है । अतः जब है कि तीन बालिकाओं का समायोजन 1 बालक 2 बालिकाओं की तुलना में उच्च स्तर का करे अतः यहाँ परिकल्पना संख्या 06 अस्वीत होती है । तालिका संख्या 2 के परिणाम दर्शाते है कि तीन बालिकाओं का सम्पूर्ण मध्यमान 186.6 तथ 2 बालक एवं 1 बालिका का सम्पूर्ण मध्यमान 176 है जिससे यह स्पष्ट होता है कि 2 बालक एवं 1 बालिका के परिवार की तुलना में 3 बालिकाएँ ज्यादा समायोजन के परिवार कर लेती हैं । अतः हमारी परिकल्पना संख्या 7 स्वीकष्त की जाती है कि एंकाकी एवं सहोदर 3 बालिकाओं एवं 2 बालक एवं 1 बालिका में समायोजन में अंतर होगा।

परिणाम देखने से यह भी ज्ञात होता हैं कि 3 बालकों का सम्पूर्ण मध्यमान 188 तथा 1 बालक 2 बालिकाओं का सम्पूर्ण मध्यमान 188 तथा 1 बालक 2 बालिकाओं का सम्पूर्ण मध्यमान 179 आया । अतः यहाँ भी समायोजन में स्तर में अंतर देखने को किया । अतः परिकल्पना संख्या 8 स्वीकष्त की जाती है तथा तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 3 बालकों का सम्पूर्ण मध्यमान 179 है तथा 2 बालक एवं 1 बालिका का सम्पूर्ण मध्यमान 176 है । अतः यहाँ भी समायोजन के स्तर में अंतर देखने को मिला । वातावरण, आयु, लिंग आदि का प्रभाव समायोजन के स्तर को प्रभावित करता रहता है और समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है इसीलिए हर व्यक्ति कुछ न कुछ समायोजन अवश्य स्थापित करता है तथा वातावरण में रहकर परिवार, समाज सब में समायोजन बनाये रखता है । प्रत्येक व्यक्ति में व्यैक्तिम भिन्नताएँ पाई जाती है । एक ही व्यवसाय में कार्यरत होने पर भी दो प्रमुख या दो स्त्रियों में व्यैक्तिकता पाई जाती हैं । यह व्यैक्तिकता उनके व्यक्तित्व के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकती है । अतः इन्हीं भिन्नताओं योग्यताओं आदि के कारण समायोजन के प्रतिमानों में अंतर की कल्पना की जाती है । अतः यहाँ परिवारों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पनाएँ स्पष्ट रूप से स्वीकृत होती है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वस्थ्य यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण एंकाकी एवं सहोदर बालक एवं बालिकाओं का समायोजन का उच्च स्तर पाया गया । वातावरण लिंग विभाग आदि में भिन्नता होने पर भी समायेाजन के स्तर में कोई प्रभाव देखने को नहीं मिला । प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएँ, दामताएँ, रूचि आदि रूचि समायोजन आदि भिन्न–भिन्न होती है जो कि उनके अनेक वातावरणीय, सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक कारणों से प्रभावित होती है परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन के प्रतिमानों पर वातावरण शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक कारणों का प्रभाव पड़ा। समायोजन का स्तर उच्च पाया गया तथा विभाग परिवार, आयु, लिंग आदि में अन्तर होने पर भी समायोजन के स्तर में कोई अन्तर ना ही पाया गया ।

संदर्भ

1. ओझा आर.के. द्वारा निर्मित समायोजन मापनी ।
2. श्रीवास्तव डी.एन. वर्मा प्रीति, मनोविज्ञान, *शिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानो में सांख्यिकी ।*
3. Bajpais, (1999), *Effect of caste belonging mgenlsas on adjustment of high school girls the progress of education (Pune Vidyarthi & Griha Prakashan Sada Shive Peth)* July 1999 Vol IXXIII.
4. Mohd. Jafar, (2002), Munantzir, *A comparative study of self concept adjustment and stress of highly and low achievers undergraduate boys and girls of Rohilkhand Regin*, A Ph.D Thesis (Psy.) (2002) Rohilkhand University, Bareilly (U.P.).
5. Rita Jetlye (2003), "*A comparative study of 16 PF of highly adjusted & low adjusted undergraduate boys and girls of Rohilkhand Region* Ph.D. Thesis R.U. Bareilly.
6. *Studies of Adjustment* by Google from Internet.